Dr. Mohini Kumari al. International Journal of Recent Research Aspects ISSN: 2349-7688, Vol. 5, Issue 1, March 2018, pp. 546-554

वैश्वीकरण के दुष्परिणाम : नाकारात्मक पक्षों का विश्लेषण

डॉ० मोहिनी कुमारी

इतिहास विभाग

तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

mohini.khg@gmail.com

शोध सारांशः–

वर्त्तमान में वैश्वीकरण शब्द समूचे मानव सभ्यता के साथ बद्ध, आबद्ध और संबंद्ध हो चुका है। चाहे वह साहित्य हो, शिक्षा हो, संस्कृति हो या व्यापार–वाणिज्य–तकनीकि। प्रत्येक क्षेत्रों में वैश्वीकरण का प्रभाव है। वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ है– पूरे विश्व का एकीकरण। इस एकीकरण का आशय आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से है, जहाँ बिना किसी बंधन के एक देश दूसरे देश तक वस्तुगत उत्पादनों, विचारों, मूल्यों, संस्कृतियों आदि का आपस में साझा व्यवहार एवं आदान–प्रदान करते हैं। वैश्वीकरण वस्तुतः उस एकरूपता की प्रक्रिया को दर्शाती है, जिसके अंतर्गत वस्तुओं, सेवाओं, उत्पादन साधनों, कच्चे माल, वित्त, प्रौद्योगिकी आदि का बिना सरकारी नियंत्रण के देश की सीमाओं से परे सीधा प्रसार होता है।

वैश्वीकरण ने उदारीकरण का सहारा लेकर स्वयं का विस्तार किया है। इसके कई नाकारात्मक प्रभाव भी हैं। यह आर्थिक सत्ता के एकीकरण के नाम पर केन्द्रीयकरण करके राजनीतिक और सामाजिक एवं आर्थिक अधिकारों को भी सीमित कर रहा है। वैश्वीकरण ने पूंजीपतियों का वर्चस्व स्थापित कर दिया है। इसने विकास के सभी कार्य नवधनाठ्य एवं साम्राज्यवादी हाथों में सौंप दिया हैं वैश्वीकरण के कारण सर्वसमावेशी लोकतंत्र पर खतरा बढ़ गया है। कल्याणकारी राज्यों के सिद्धांत के जगह पे एण्ड यूज का कल्चर बनता जा रहा है। रोजगार के अवसर बढ़ने के बजाए कम होते जा रहे हैं। किसान, मजदूर और युवा आत्महत्या, निराश और कुंठा के शिकार होते जा रहे हैं। तकनीकि एवं संचार के बढ़ते प्रभाव और किसी भी तरह सफलता प्राप्त करने के दबाव

© 2018 IJRAA All Rights Reserved

ने मानवीय संवेदनाओं का दम घोंट दिया है। वैश्वीकरण के संदर्भ में ये तमाम नाकारात्मक पक्ष सोचनीय हैं।

कुंजी शब्दः— वैश्वीकरण, उदारीकरण, पूंजीवादी व्यवस्था, लोकतंत्र, दुष्परिणाम।

प्रस्तावना :— वर्त्तमान में विश्व का प्रत्येक देश वैश्वीकरण व इसकी नीतियों से प्रभावित हैं इस संदर्भ में कई शोध किये गये हैं। फिर भी वैश्वीकरण के अनेक पहलू ऐसे है जो अनछुए रह गये हैं। जिसमें से वैश्वरीकरण का नाकारात्मक प्रभाव भी हैं भारतीय समाज के कुछ हिस्सों पर इसका काफी नाकारात्मक प्रभाव भी पड़ा है लेकिन वह किस रूप में हैं ये जानना काफी कठिन है। प्रस्तुत लेख में इसी नाकारात्मक प्रभाव का अध्ययन किया गया है। भारत में वैश्वरीकरण के सीधे प्रभाव का विश्लेषण कर पाना कठिन कार्य है। वैश्वरीकरण का प्रभाव रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, समाज, संस्कृति, पर्यावरण, जैव विविधता आदि सभी पर निश्चित रूप से पड़ा हैं यह प्रभाव कई स्थानों पर काफी उलझा देने तथा अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति पैदा करने वाला प्रतीत होता है।

वैश्वरीकरण सामाजिक रिश्तों में घटती दूरियों व सीमारहित विशेषताओं की प्रक्रिया है जिसमें विश्व एक होता जा रहा है। इस प्रक्रिया के द्वारा अब मानवीय जीवन का क्षेत्र विस्तृत हो गया है।[1] आज विश्व के एक हिस्से में घटने वाली सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक कार्यों व नीतियों के प्रभाव से लगभग पूरा विश्व ही प्रभावित होता है। साथ ही प्रत्येक स्थान की संस्कृति व राजनीतिक घटनाओं का प्रभाव पूर्ण विश्व पर पड़ता है। कैटरीना किनवैल व क्रिस्टीना जोनसन के अनुसार वैश्वरीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें स्थानीय संस्कृति तथा स्थानीय लोगों को ध्यान में रखते हुए विचारों, घटनाओं व संस्कृति को समझा जाता है तथा विचारों को व्यक्त किया जाता है।[2]

वैश्वरीकरण में उत्पादन उपभोग व जीवन स्तर को सीमाओं से परे ध्यान में रखकर किया जाता है। इसमें आर्थिक कार्यविधि भी सम्मिलत है। अश्विनि. के. रे. के अनुसार वैश्वीकरण कोई नया तत्व नहीं है। शीतयुद्ध के पश्चात् अनेक देशों ने आपसी समझ व सामंजस्य की नीति को बढ़ावा दिया जैसे कि अन्तराष्ट्रीय खेलों, क्रिकेट, टेनिस आदि से व्यक्त किया गया है। वैश्वीकरण आज की घटना नहीं है। यह

© 2018 IJRAA All Rights Reserved

सैकड़ों सालों से चल रही है। यदि इतिहास की तरफ से देखें तो पायेंगे मध्यकाल से ही बड़े स्तर पर श्रमिकों, दासों व धन का आवागमन प्रारम्भ हो गया था। देखा जाए तो साम्राज्यवाद, उपनिवेशबाद वैश्वीकरण का ही एक रूप था अर्थात् एक ही सत्ता विश्वव्यापी थी।[3]

आज विश्वस्तर पर अनेक देशों की अर्थव्यवस्थाओं के मध्य प्रतिस्पर्धा व्याप्त है। यह प्रतिस्पर्धा खेलों, सामाजिक, सांस्कृति, राजनीतिक तथा आर्थिक प्रत्येक क्षेत्र में देखी जा सकती हैं। इसके पीछे मुख्य कारण आर्थिक कारणों को माना जा सकता है। आर्थिक कारणों व विचाराधाराओं के साथ ही विश्व की अनेक नीतियों को देश आपस में जोड़ रहे है। देखा जाए तो उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वरीकरण आर्थिक विकास की अवधारणायें हैं जिन्हें कि विकास के क्षेत्र में रामबाण माना जा रहा है।

इस प्रकार तकनीकी क्षेत्र में भी वैश्वीकरण का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। पलक झपकते ही विद्युत तकनीक व इंटरनेट द्वारा सूचनाओं व चीजों का प्रवाह पूरे विश्व में एक साथ हो रहा है। किसी भी ब्लू प्रिंट या तकनीकों का प्रवाह प्रकाश की गति से हो रहा है।[4] वर्त्तमान में विश्व में विश्व व्यापार श्रमिकों को अंतराष्ट्रीय मौद्रिक संघ, आई०बी०आर०डी०, विश्व बैंक आदि से सम्बंधित निर्णय अमेरिका अकेला ही वैश्वीकरण की शर्त्तों व नियमों का निर्धारण कर रहा हैं और इसे पूरे विश्व पर थोप रहा है। अन्य देशों की बहुल संस्कृति के लिए व्यापकता को कम रहा है।[5] पश्चिमी देशों अमेरिका आदि प्रायः सभी प्रकार के निर्बन्धन विकासशील देशों द्वारा आयात किये जाने वाली वस्तुओं व सेवाओं पर करो को थोपा जा रहा हैं उनकी यह नीति व्यापार को पर्यावरण व श्रम मानकों से जोड़ती है। जो कि नवसंस्कार बाद की दिशा की ओर जाता हैं वे अपनी तकनीकियों को भी छिपाते हैं तथा इनका प्रयोग सैन्य संबंधी व अन्य सामान्य प्राकृतिक प्रक्रियाओं में करते हैं। इस तरह आयात से बचाने के दो कारण है। एक विकासशील देशों में प्रौद्योगिकी का विकास न हो पोय जिससे की उन्नत प्रौद्योगिकी में विकासशील देश प्रतिस्पर्धा न बन पाये। साथ ही विकसित देशों का क्षेत्राधिकार बना

© 2018 IJRAA All Rights Reserved

रहे जिससे कि विकासशील देश उन पर निर्भर बने। विकसित देशों द्वारा लगातार यह कोशिश की जा रही है कि उदारीकरण के नाम पर विदेश व्यापार द्वारा विकासशील देशों पर दबाव बनाया जा रहा है तथा एकाधिकार और अवांछित व्यापारी नीति के लिए सरकारी स्तर पर कुछ परिवर्त्तन किये जाये या उसको बदल दिया जाये। विकसित देशों द्वारा आई०एम०एफ० व विश्व बैंक तथा विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्थओं के द्वारा उदारीकरण के नाम पर विकासशील देशों पर दबाव कुछ इस तरह से डलवाया जा रहा है। जैसे पुलिस वाले कमजोर लोगों पर दबाव डालते है।

इसके पीछे समाजविद् मुख्य कारण यह मानते है कि वैश्वीकरण वैश्विक मानव हितों को प्रस्तुत नहीं करता क्योंकि संस्कृति स्थानीय होती है तथा उसी के अनुसार लोगों के व्यवहार और परंपराऐं होती है जिसका निर्धारण काफी हद तक भौगोलिक परिस्थितियों के द्वारा होता है।[6] जोसेफ स्टीलीतिज ने अपनी पुस्तक ग्लोबलाइजेशन एण्ड इट्स डिसकंटेंट में यही लिखा है कि पश्चिमी विकसित देशों द्वारा विश्व व्यापार संगठन तथा अन्तराष्ट्रीय मौद्रिक संघ जैसी संस्थाओं के माध्यम से निजीकरण, उदारीकरण व स्थायीकरण की प्रक्रिया को निश्चित तौर से अव्यवस्थित कर रहा है। और इसके निर्देशों के अनुसरण करने के कारण तीसरी दुनिया के कई देश 1960–70 के दशक से भी बुरी स्थिति में पहुँच गए हैं।[7]

वैश्वीकरण के गंभीर प्रभावों की चर्चा डरबन ने 2002 में हुए अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन में की है। विउदारीकरण का मुद्दा भी उठाया गया। यू०एन० के सेक्रेट्री जनरल द्वारा प्रस्तुत किये गये आंकड़े चौकाने वाले थे। इसके अनुसार वैश्विक विश्व में 86 प्रतिशत निजी उपभोग विश्व के केवल 20 प्रतिशत धनी व्यक्तियों द्वारा किया जाता हैं आज धनी देश विश्व जी०डी०पी० का 60 प्रतिशत से अधिक रखते है लेकिन इन देशों में विश्व की कुल जनसंख्या का 15 प्रतिशत ही है। आज अनेक देशों द्वारा वैश्वीकरण को अपनी ओर बढ़ने से रोकने के प्रयत्न किये जा रहे है तथा इसके विरूद्ध आवाज उठाई जा रही है।[8]

© 2018 IJRAA All Rights Reserved

विश्व समाज संघ की ब्राजील में हुई बैठक में एक लाख से भी अधिक प्रदर्शनकारियों ने वैश्वीकरण की उन नीतियों का जिनका निर्माण अमेरिका व जी–8 देशों द्वारा किया गया था बड़े पैमाने पर विरोध किया गया तथा इन नीतियों को सिरे से नकार दिया। इन प्रदर्शनकारियों की संख्या ने सम्पूर्ण विश्व व शोधार्थियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।[9] विकासशील देशों में दस लाख से भी अधिक लोग झुग्गी–झोपड़ियों में रहते हैं तथा 800 मिलियन लोग लगभग रोज भूखे सोते हैं। 245 मिलियन बच्चों को काम करना पड़ता है। गरीब देश और गरीब होते जा रहे है। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार विकासशील देशों ने 1.6 ट्रिलियन डॉलर का धन उधार लिया है। 2004 में इन देशों से 300 बिलियन डॉलर धनी देशों को गया।[10]

उपरोक्त तथ्यों से यह साफ होता है कि वैश्वीकरण ने बहुत बड़ी संख्या में तीसरी दुनिया के देशों को बुरी स्थिति में ला दिया है। इसको इस रूप में भी देखा जा सकता है कि जब अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक जुड़ाव के बढ़ने पर देश में राज्य स्तर पर सरकार की शक्ति व पकड़ कम हो जाती है और वो लम्बे समय तक विचारों के प्रवाह और आर्थिक वस्तुओं को उनकी सीमा में बांधकर नहीं रख सकते हैं और अंतराष्ट्रीय नीति निर्धारक का महत्व भी बहुत हद तक अक्रियाशील हो जाता है। इन देशों की राज्य शक्ति बहुत कम हो गई है क्योंकि बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ जो बहुत अधिक संख्या में व बहुत जगह बहुत सी सरकारों से भी अधिक शक्तिशाली हो गई है, केन्द्रीय अमेरिका व लैटिन अमेरिका में वृद्धि कर रही है।[11]

1991 के बाद भारत में भी तीव्र रूपांतरण चल रहा है। आर्थिक सुधार, औद्योगिक सुधार, श्रमिक सुधार, कृषि में सुधार व सेवा क्षेत्र सभी इन नीतियों का ही परिणाम हैं। लेकिन इन सुधारों के लाभ समान नहीं हैं। यह समाज में असमानता के लिए उत्तरदायी है। वैश्वीकरण के कारण पिछले 21 वर्षों में असमानता ने भारत में नाटकीय ढंग से आसमान की ऊँचाईयों को छुआ है। प्रभावी समूहों द्वारा अपने स्त्रोतों को प्रयोग में लेने के विशेषाधिकारों को बढ़ाया है जबकि थोड़ी सी ही मात्रा वैश्विक व्यवसायिक संगठनों को करने का संकेत मात्र है।

© 2018 IJRAA All Rights Reserved

अश्विन. के. राय कहते हैं। कि इन सुधारों ने आर्थिक वृद्धि को असमान रूप से बढ़ाया है। 1990 के मध्य में जी.डी.पी. की वृद्धि दर 7.5 प्रतिशत वार्षिक से अधिक पहुँच गई। कृषि वृद्धि दर भी ऊँची रही। सामाजिक सूचक जैसे–शिक्षा, जन्मदर, मृत्युदर में भी सुधार हुआ। उच्च वृद्धिदर तुलनात्मक रूप से असमान रूप से वितरित हुई। जिसमें गरीब लोगों की संख्या में वृद्धि को नेतृत्व किया और तो और क्षेत्रीय विभिन्नता भी सिमट गई जो उपनिवेशवाद के युग में भी थी।[12]

पिछले दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था ठीक तरह से बढ़ रही हैं 200–300 मिलियन लोग उपर बैठे है लेकिन 700–800 मिलियन लोग वे है जो इस वृद्धि प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग नहीं ले रहें है। यह स्थिति वास्तव में इतनी अधिक संख्या में लोगों की है जो ध्यान देने योग्य है। भारतीय संविधान के भाग–4 में कुछ उद्देश्य बनाये गए है वे हैं – समाजवादी तरीके से एक बहुत बड़े वर्ग को लाभान्वित करना। भारत की जनसंख्या अगले पचास वर्षों में 1.5 से 1.6 अरब हो जाएगी। इस शताब्दी के अगले अर्द्धकाल में सरकार को बहुत ही अधिक बदलाव करने पड़ेगें। यू.एन. मानव विकास रिपोर्ट सन् 2011 के अनुसार भारत का स्थान कुछ 134 पड़ोसी देशों से पीछे था जैसे श्रीलंका, मलेशिया आदि।

आजकल एक नया ही नव–उदारवाद वैश्वीकरण आ रहा है। यह एक सिद्धान्त में नहीं है। यह सशक्त राज्यों के द्वारा लाया जा रहा है। फ्रंट लाइन ग्रुप के सुकमारम मुरलीधरन के अनुसार आज अच्छे कार्य वेलफेयर राज्य की वैश्वीकरण के दौर में आवश्कयता नहीं हैं परंतु समाज कल्याण के राज्य को इसके बारे में सोचना पड़ेगा। वैश्वीकरण ने सरकार की राष्ट्रीय नीति की क्षमता व क्षेत्र को नियंत्रित कर लिया है। राज्य के नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार के लिए सीधा हस्तक्षेप मुक्त बाजार द्वारा किया जा रहा है। यह विश्वास की प्रमुखपूर्ण विचारधारा है। अंत में हम यही कह सकते है कि वैश्वीकरण राष्ट्रीय संप्रभुता में कमी का परिणाम है। विकासशील देशों जैसे भारत आगे बढ़ रहा है विकसित देशों की अर्थव्यवस्था में एकीकरण की ओर और इन अर्थव्यवस्था पर और अधिक आश्रित होता जा रहा है। कुछ भी स्वयं

© 2018 IJRAA All Rights Reserved

आत्मावलम्बी वृद्धि को प्रकट करना चाहिए। देश की सलाह है कि खाद्यान्न उत्पादन व अन्य आवश्यक वस्तुओं और सामरिक वस्तुओं में आत्मनिर्भरता को प्राप्त करना नहीं छोड़ना चाहिए। कृषि व डेयरी क्षेत्र को विदेशी कंपनी के लिए खोलने पर सरकार को एहतियात के तौर पर इनके दलाली, ट्रांसपोर्ट व भण्डारण पर निगरानी रखनी चाहिए। इसी प्रकार कृषि के क्षेत्र में भी ऐसा ही करना चाहिए।

भारत में लगभग 6.5 लाख गांव और शहरी झुग्गी–झोपड़िया है जहाँ जीवन का स्तर बहुत ही निम्न है।[13] अर्जुन सेन गुप्ता कहते है कि "विकास मानव का अधिकार है, भारत जैसे गरीब देशों में उच्च आर्थिक विकास दर के स्वप्न को न दिखाकर न्याय का वितरण प्राथमिकता पर रखना चाहिए।"[14] विकास का दूसरा पहलू न्याय को प्राथमिकता के साथ बांटना है जो डब्लू.टी.ओ. अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष, व विश्व बैंक की पंच लाइन को बताता है कि बिना कठोर निर्णय के यह संभव नहीं है।[15] हमारी सरकार को कम से कम कुछ सामाजिक व राजनितिक शर्त्तों पर काम करना चाहिए जो कि विकास की गतिविधियों की सफलता में अनिवार्य है। यह राज्य द्वारा नियंत्रित और बाजार बलों द्वारा नियंत्रित है।[16] यह सभी काम बड़े स्तर पर होने चाहिए जिनमें सभी को शिक्षा, सभी के लिए स्वास्थ्य सेवा, सभी को रोजगार और सामाजिक सुरक्षा और हाशिये पर आये समूह को समाज की मुख्य धारा में उनके सशक्तिकरण के आधार पर वापस लाना है। हाल ही के शोध बताते है कि देश जिन्होंने उदारीकरण की नीति को सफलतापूर्वक लागू किया न्यूनतम सामाजिक राजनितिक शर्त्तों को लागू करने के बाद, यहां पर कोई उत्तेजक प्रभाव वैश्वीकरण की नीति का सामाजिक स्तर पर विरोध देखने को नहीं मिला।[17]

उपसंहार :– भारत ने किसी पृथककरण की नीति को नहीं अपनाया जबकि यह ऐसा कर सकता है। सरकार को वैश्वीकरण के लिए ऐसा करना चाहिए था क्योंकि यह कोई प्रौद्योगिकी करण न होकर यह एक राजनीतिक इच्छा थी। भारत को विकसित देशों के समान वृद्धि करनी चाहिए। वैश्वीकरण अर्थव्यवस्था के सभी स्तरों पर नियंत्रण करने का कोई अधिकार पत्र नहीं देता हैं भारत को विश्व अर्थव्यवस्था में सशक्तीकरण के रूप में

© 2018 IJRAA All Rights Reserved

इसे एक हथियार के रूप में प्रयोग करने में सक्षम बनना होगा। भारत की सरकार को न्यूनतम सामाजिक व राजनीतिक नीतियों को प्रधानता देनी चाहिए जो विकास की सफलता की गतिविधियों का एकीकरण करें। भारत को आधारभूत संरचनागत विकास के लिए बहुत सारे निवेश को देश में ही खोजना चाहिए जेसे मानव स्त्रोत विकास, सामाजिक क्षेत्र में विकास और शोध विकास आदि। विदेशी पूंजी व प्रौद्योगिकी पर निर्भरता कम करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. Steve smith and John Baylis; The Globlization of world politics, OUP. New York, 1997, p. 14.
2. Catarina kinnvall and Kristina Jonsson, "The Global local nexus Revisited: Constructing Asia in time of Globalization", in catarina kinnvall and Kristina Jonson eds., Globalization and democratization in Asia, Routaldge: London & New York, 2001,p-129.
3. Ray. Aswini. K, " Globalization and Democratic Governance: The India Experience" in Catarina kinnavall and Kristina Jonsson eds, Globalization and democratization in Asia, Routeldge: London & New York, 2001, p-145.
4. Ibid.
5. Rajen. Harshe, "The challenger of globalization and some critical reflections" in B. Ramesh. Babu, ed. Globalization and the south Asian state, New Delhi; south Asian publishers, 1998, pp. 22-26.
6. Vandan Shiva, " My vision of India: 2047 A.D. Mainstream, December 22, 2001, p-73.
7. Stiglitz joseph, Globlization and Discontent, New Delhi: Penguin Books, 2002, p-84.
8. Bhardwaj Atul, "Understanding the globalization Mind game" in strategic analysis vol. 27, No. 3, 2003, New Delhi – IDSA, pp – 309-330.
9. "Hindu" New Delhi January 26, 2005, p-46.
10. ibid.
11. Kausik Asha, "Globalism and Swaraj" in B. Ramesh Babu, ed. Globalzation and the south Asian state, New Delhi: South Asian Publisher 1988, pp-36-37.
12. Ray. Aswini. K; No. 3, pp – 45-46.
13. Dubay. Muchkund WTO: An Unequal Treaty, New Delhi: New Publishers. 1996, p-32.
14. Stiglitz. Joseph, Globlization and its Discontent, New Delhi: Penguin Books. 2002, p-22.

© 2018 IJRAA All Rights Reserved

15. Ray. A.K. 'The global system in a Historical Perspective: A view from periphery." VRS Monograph series, No. 272, institute of Developing Economics, Tokyo, 1996, p-66.
16. Scott, A, ed. 'The limits of Globalization London: Routledge, 1997, p-229.
17. Yurlov, Felix. N., "Globalization, Inequality and Threat of sustainable Development." World Affairs, 5 (1) Jan-Mar, 2001, pp-36-53.

IJRRA

© 2018 IJRAA All Rights Reserved